वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अगस्त – 2024

- जीवन के बनने के नियम
- संसार में दुःख क्यों हैं उनका निवारण कैसे? – 2
- देव तीर्थ का सच्चा देव प्रसाद
- आत्मिक जीवन की रक्षा और उन्नति के सम्बन्ध में नेचर के चार बड़े बड़े नियम
- स्वास्तित्व के सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधन
- आपकी छोटी सी मदद किसी के जीवन का कांटा बदल सकती है
- हमारे रिश्ते बिगड़ रहे हैं
- उच्च संगत से लाभ
- एक नन्हा प्रयास
- शुभ संग्राम
- 'सेवक उत्सव' कल्याण

जीवन के बनने के नियम

प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है (लेकिन जीने की आकांक्षा रखकर कोई नहीं जी सकता) जीने के अपने नियम हैं। नेचर के नियम अटल हैं, नियम को अटल इसलिए कहते हैं कि वह कभी नहीं टलते। चाहे कोई जन जाने या न जाने, नियम का नतीजा ज़रूर पूरा होगा। अगर तुम जानना चाहो कि नेचर में तुम्हारे अस्तित्व के कायम होने के नियम क्या हैं? तो जैसे शरीर के सम्बन्ध में नियम हैं, वैसे ही आत्मा के सम्बन्ध में भी नियम हैं। प्रत्येक मनुष्य को अपनी गतियों को पहचानने की ज़रूरत है। कौन सी गतियां नीच हैं और कौन सी गतियां उच्च हैं? फिर केवल जान लेना ही यथेष्ट नहीं। जो भाव नीच गति करवा रहा है, उसमें परिवर्तन आने की आवश्यकता है। उच्च परिवर्तन उच्च भावों से आता है। यह प्रभाव प्रत्येक अधिकारी आत्मा को देवात्मा से मिल सकते हैं। कोई भी जन तजरबा करके देख सकता है। समाज में रहकर भी एक एक जन का पतन हो सकता है और होता है। क्यों? इसलिए कि देवात्मा के देव प्रभावों का मिलना बन्द होने का नियम पूरा हो जाता है।

परिवर्तन दो प्रकार का है। एक निराकांक्षित परिवर्तन और दूसरा आकांक्षित परिवर्तन। तुम में से बहुतों में जो परिवर्तन आया है यह निराकांक्षित है अर्थात (तुमने खुद नहीं चाहा कि तुम में उच्च परिवर्तन आवे) कितने ही जन हैं, जिनमें और अधिक परिवर्तन आना चाहिए। हम यत्न करते हैं कि उनमें बेहतरी आवे। आकांक्षित परिवर्तन के बिना सब विनष्ट होने के लिए हैं। ऐसी अवस्था रखकर बेशक कोई खुश रह सकता है, परन्तु उसका नष्ट होना आवश्यक है।

यह जानने की आवश्यकता है कि जीवन दाता से कटकर एक एक जन का आत्मा नीच बनता है, अन्धकार ग्रस्त हो जाता है और कठोर बन जाता है। इसलिए जब तक तुम्हारे साधन देव प्रभावदायक न हों, तब तक तुम्हारा भला नहीं हो सकता। हम पूछते हैं कि तुम्हारा धर्म जगत में जन्म हुआ है या नहीं? धर्म जगत में जन्म होने पर यह आकांक्षा पैदा होती है कि मेरा नीच गतियों से उद्धार हो। मेरे भीतर उच्च गतियों का विकास हो। इसमें जो कुछ जाता हो जावे, रहता हो रहे। याद रखो, नेचर के किसी अस्तित्व को सताकर या मारकर तुम उसके नुकसान से नहीं बच सकते, तबाही से नहीं बच सकते। बेशक तुम अन्दर विकार या मैल को छुपा कर रख सकते हो, उससे तुम मरोगे ज़रूर।

(देव वाणी के नोट में से)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 8
अगस्त – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

संसार में दुःख क्यों हैं उनका निवारण कैसे – (2)

जुलाई के अंक में दिया गया था कि मनुष्य मात्र को अपने जीवन में अनेकों दुख उठाने पड़ते हैं। प्राकृतिक आपदाओं से जो दुःख मिलते हैं, उनमें हमारी कोई पेश नहीं जाती। इसके अलावा विद्यार्थी जो दुख उठाते हैं, धन कमाने के लिए भी कड़ी मेहनत का जो दुःख उठाया जाता है, माता बच्चे को जन्म देने के लिए जो दुःख उठाती है, यह दुःख ऐसे हैं जो अन्त में सुख में परिवर्तित हो जाते हैं।

मनुष्यों द्वारा मनुष्यों पर जो अत्याचार होते हैं या उनके अन्दर के स्वभाव के द्वारा जो अनुचित दुःख पैदा होते हैं जिनके कारण घर – घर नर्क बना हुआ है, उनसे निवृति मिल सकती है। पिछले लेख में केवल नशे के सुख की हानियों का जिक्र किया गया था। यह भी स्पष्ट किया गया था कि सभी नीच सुखों की गुलामी किसी ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरू, विष्णु और किसी भी देवी और देवता द्वारा नहीं भेजी जाती। मनुष्य आत्मा के भीतर तरह – तरह के सुखों के आकर्षण की शक्तियां हैं, जो एक – एक सुख की तृप्ति में लगाकर उसे अनुचित दुःखों में फंसा देती हैं।

इस लेख में आलस्य सुख अनुराग व इस सुख अनुराग की हानियों और उनसे उत्पन्न दुःखों के विषय में जानने का प्रयास करेंगे।

आलस्य सुख अनुराग :– यह शारीरिक सुख अनुराग भी हम सब में बहुत गहरा है, सिर्फ दर्जों का फर्क है। आलस्य अनुराग के दास होकर कितने ही जन :–

1. औरों के सम्बन्ध के अलावा वह अपने हित सम्बन्धी कर्त्तव्य कर्मों को भी पूरा नहीं करते।
2. अपने पूर्वजों से धन सम्पत्ति मिल जाने पर, निकम्मे रहकर वह उसी पर निर्वाह करने लग जाते है और स्वयं कोई परिश्रम नहीं करते।
3. अगर धन सम्पत्ति न मिले, तो कई बार अमीर बनने के लिए ग़लत तरीके से, ठगी से, जालसाजी से, दूसरों के हक़ों का अपहरण करके, कई बार किसी के बच्चे को उठाकर फिरौती मांगने से, बच्चों का व्यापार करने, उनके अंग भंग करके उनसे भिक्षा मंगवाने आदि अनेकों बुरे यत्नों द्वारा धन कमाने का यत्न करते हैं। इस प्रकार निकम्मेपन द्वारा या बिना मेहनत अमीर बनना चाहकर ऐसे अनेकों नाजायज अथवा गैर कानूनी ढंग अपनाते अपनाते तरह – तरह के दुखों में

फंस जाते हैं और अन्य कितने ही जन जेलों में जाकर दु:ख भोगते हैं।

4. हम अक्सर देखते हैं कि दफ्तरों में एक - एक फाईल निकलवाने में महीनों लग जाते हैं। या तो क्लर्क व अन्य ओहदेदार फोन पर लगे होते हैं या चाय पी रहे हैं..... लेकिन पूरी तनख़्वाहें लेकर भी काम कम से कम करना चाहते हैं। किसी के दु:ख सुख को वह समझ नहीं पाते। इससे जिनके काम अटके होते हैं वह किस दु:ख और पीड़ा में से गुज़रते हैं, उनका कुछ भी एहसास उन्हें नहीं होता। यह दु:ख मनुष्यों द्वारा ही मनुष्यों को मिलते हैं। उनके निकम्मेपन की सज़ा आम जनता को मिलती है।
5. हमारे देश में आलसी और निकम्मों की एक और दुनिया है, जिसमें अनेकों ही साधू अथवा फक़ीर निकम्में रहकर दूसरों के टुकड़ों पर पलते हैं। वह देशवासियों के ऊपर धर्म के नाम पर बहुत बड़ा बोझ हैं। उनमें कितने ही जन कातिल, व्यभिचारी व अन्य गुनाहों में फंसे होते हैं, परन्तु साधू वेश में होकर वह अन्य लोगों को ठगते हैं और मेहनत से कमाई करने वालों पर बोझा बनते हैं और अपने निकम्मेपन को छुपाने के लिए धार्मिक होने का ढोंग रचते है। विशेषकर वह स्त्रियों को तरह - तरह के आश्वासन देकर ठगते हैं।
6. बहुत से जन निकम्मे रहकर इधर उधर की बातों और अधिकतर गंदे हंसी मख़ौल करके या दूसरों की निन्दा करके अपना समय काटते हैं। कई बार योजनाबद्ध तरीके से एक दूसरे के झगड़े करवा देते हैं, इस प्रकार दूसरों के दु:खों का कारण बनते हैं और स्वयं भी नीच बनते हैं।
7. आलस्य के वश होकर अपने काम स्वयं नहीं करना चाहते और दूसरों पर अपने कामों का बोझ डालते हैं। वह अपने शरीर, अपने घर और उससे सम्बन्धित वस्तुओं को गन्दा रखकर, अपनी सुरक्षा में जो वस्तुएं है, उनका दुरूपयोग करते हैं। ऐसे लोग आत्म सम्मान की भावना से भी वहीन होते हैं और दूसरों को दु:ख पहुँचाते हैं।

परम पूजनीय भगवान के देव असरों में आकर एक - एक साधू ने भी निकम्मेपन की ज़िन्दगी से निजात पाई है। फिर उसने बाकी का सारा जीवन दूसरों की सेवा में बिताया। गुरू महाराज को आलस्य और निकम्मेपन से बहुत गहरी घृणा थी। उनके निकट रहने वाले कर्मचारियों को थोड़ा सा भी आलसी देखकर वह तड़प उठते थे। उनका जीवन नित्य की दिनचर्या में कुछ देर आवश्यक आराम करने के सिवाए बाकी का एक - एक मिनट उपयोगी कार्यों में गुज़रता था। यदि लिखने पढ़ने से दिमाग़ थक जाता तो पूजनीय भगवान पौधों को पानी देने, गुड़ाई करने उनकी कतर छांट करने में लग जाते। सख़्त बीमारी में भी कोई काम न करने की हिदायत होने पर कई बार फूट - 2 कर रो पड़ते और काम न कर सकने पर व्याकुल हो जाते थे।

हम ऐसे गुरू के शिष्य हैं, हमें जहां तक सम्भव हो अपने आलस्य वा निकम्मेपन से छुटकारा पाने का प्रयास करना चाहिए और अपने समय को अधिक से अधिक उपयोगी बनाना चाहिए।

- सुरजीत बराड़

देव तीर्थ का सच्चा देव प्रसाद

यह देव प्रसाद क्या है और किसको और किस तरह मिलता है? यह देव प्रसाद देवात्मा के **देव प्रभावों की सूक्ष्म लहरें हैं** और जो लोग अहं अनुराग से इस हद तक उद्धार पा चुके हैं या इसके पतनकारी अधिकार से इस हद तक ऊपर हैं कि जिससे उनके आत्मा में देवात्मा के देव प्रभावों की लहरें दाख़िल हो सकती हैं, उन्हीं को उनकी अपनी - अपनी योग्यता के अनुसार यहां की देव प्रभावदायक सभाओं में देव प्रसाद उस समय मिलता है जबकि वे उनमें श्रद्धा और ध्यानपूर्वक योग दे सकते हों। इस प्रकार योग देने से किसी अधिकारी आत्मा में जब देवात्मा के महान प्रभावों की सूक्ष्म लहरें प्रवेश करती हैं, तब उनकी देव ज्योति की **झलक** में वह उनके देव रूप के किसी अंश के दर्शन पाता है और उसकी महिमा को देखकर **आश्चर्य** और **सम्मान** भाव से भर जाता है और उन भावों से भाव विभोर होकर अपने मुंह से "धन्य हो! धन्य हो!! के शब्द उच्चारण करने के लिए मजबूर हो जाता है। ऐसे समय में इसी देव ज्योति में उसे अपनी आत्मिक **शक्ल** भी कुछ नज़र आती है और वह अपने एक या दूसरे प्रकार के मिथ्या विश्वास को या अपने एक या दूसरे प्रकार के नीच अनुरागों या अपनी किसी नीच घृणा की हानिकारक और बुरी तस्वीर को भी देखता है और दिल ही दिल में उसे देखकर न केवल परेशान और शर्मिन्दा होता है बल्कि **देव तेज की लहरों** के काफी मात्रा में पहुंच जाने से उससे पूर्णत: या किसी सीमा तक मोक्ष भी लाभ करता है। लेकिन साधारणत: एक - एक जन अपने अन्दर उसकी दासता का बन्धन इतना जोरदार देखता है कि वह यह जानकर भी कि यह दासत्व मेरे आत्मा के लिए विनाशकारी है और उसे दिनों दिन पतित और नीच और दुर्बल बनाने वाला है और उसके स्थूल शरीर के त्याग के बाद उसे नीच लोकों में रखकर उसके जीवन को तबाह करने वाला है तो भी वह पुराने नशई की तरह उससे उद्धार पाने की सच्ची इच्छा नहीं कर सकता और ऐसी हालत में अपने दिल ही दिल में यह कह कर कि मैं इस हालत से नहीं निकल सकता, अपनी तसल्ली कर लेता है। इसी तरह किसी अधिकारी आत्मा को देवात्मा की देव ज्योति में यह दिखाई देता है कि **उसके शरीर और दिमाग़ की जो शक्तियां नेचर के विकासकारी विभाग का साथ नहीं देतीं और सत्य और शुभ की जय के काम नहीं आतीं, वह उसके नीच अनुरागों और उसकी नीच घृणाओं के कामों में खर्च होकर नेचर के अटल नियमानुसार उसके आत्मिक जीवन को तबाह करती हैं। देवात्मा की देव ज्योति में वह इस सत्य को देखता है और अपने भीतर यह भाव उठता हुआ अनुभव करता है कि उसे अपने धन या अपनी सम्पत्ति को या अपने शरीर की शक्तियों को अपनी या औरों की तबाही के काम में और खर्च नहीं करना चाहिए और उन्हें देवात्मा के अद्वितीय जीवन व्रत की सिद्धि के लिए अवश्य अर्पण करना चाहिए और वह पूर्णत: या किसी हद तक अपने इस भाव को पूरा करता है** - कोई - कोई अधिकारी जन अपने आत्मा में देवात्मा के जीवन व्रत की अद्वितीय महिमा को देखकर उनके प्रति

इतनी श्रद्धा व अपने ऊपर उनके उपकारों को देखकर उनके लिए अपने भीतर **ऋण परिशोध** का इतना ज़ोरदार भाव अनुभव करता है कि वह **उनके जीवन व्रत या उनके लिए अपने आपको या अपने धन या अपनी सम्पत्ति को अर्पण करने या भेंट करने में अपना परम कल्याण देखता है और पूरे तौर पर या किसी अंश में अपने ऐसे भावों की तृप्ति करता है।** इस प्रकार की जहां जहां तक हलचल नाना आत्माओं में उनके अधिकार के अनुसार पैदा होती है, वहां वहां तक उन्हें देव आत्मा का जो सच्चा देव प्रसाद मिलता है उससे सत्य और शुभ की जय होने के अतिरिक्त उनका आत्मिक परम कल्याण होता है।

याद रखो! कि नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के दास बन जाने से अन्य बहुत सी ख़ौफ़नाक हानियों के सिवाय हर एक आत्मा में **उल्टी दृष्टि** की बीमारी पैदा हो जाती है कि जिसके कारण ऐसा मनुष्य सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य, अहित को हित और हित को अहित के रूप में देखता है। तुम लोगों में से जिनके आत्मा इस आत्म घातक बीमारी में ग्रस्त हैं, वे धन, सम्पत्ति आदि को लक्ष्य की शक्ल में देखते हैं, जबकि **वास्तव में वह लक्ष्य नहीं हैं,** बल्कि आत्मा की भलाई में सहायक होने के लिए **केवल एक साधन हो सकते हैं।** इसीलिए ऐसे जन अपने रुपये और अपनी जायदाद को सत्य और शुभ के प्रचार के काम में अर्पण करने और ऐसा करके अपना और औरों का आत्मिक भला करने की बजाय, उसे अपनी सन्तान को दे देना चाहते हैं और उनकी वह सन्तान भी जो खुद कमाने खाने के योग्य हो चुकी है और बहुत से भिखमंगों की तरह **आत्म सम्मान से इस हद तक ख़ाली** है कि वह पूरे बेशर्म बनकर उनकी ओर अपने हाथों को बढ़ाकर यह कहती है कि- "पिता जी ! तुम अपने रुपये और अपनी जायदाद को सत्य और शुभ या धर्म के लिए दान करके अपना और समाज और देश का कुछ भी भला न करो। तुम वह सब हम को दे दो" और वे उनके नीच अनुरागी और दास उनकी इस **अनुचित प्रार्थना और बुरी और शर्मनाक हालत के लिए** बजाए कुछ तकलीफ महसूस करने के और उन्हें अपना बुरा चाहने वाला देखने पर उनकी ऐसी बुरी इच्छा के लिए कुछ घृणा मालूम करने के उन्हें यह कहने के लिए तैयार हो जाते हैं कि "अच्छी बात! हम तुम्हारी ही इस प्रार्थना को मानेंगे और अपने रुपये और अपनी सम्पत्ति को सच्चे धर्म की जय के लिए अर्पण करके उससे अपना और औरों का हित साधन करने की बजाए तुम्हारी नीच और अनुचित प्रार्थना को पूरा करेंगे" ओह ! नीच अनुरागों का किस प्रकार विषैला और ख़ौफ़नाक प्रभाव!!

अब यदि देवात्मा की देव ज्योति में तुम्हें यह सत्य दिखाई देता हो कि जो मनुष्य आत्मा इस हालत में पहुंचा हुआ हो कि वह सत्य के मुकाबले में मिथ्या को और शुभ के मुकाबले में अशुभ को पसंद करता और उसका साथी और सहायक बनता हो, उसके आत्मा का कल्याण असंभव है और उसकी आत्मिक भलाई का रास्ता बन्द है और वह पतन की राह में दिनों दिन रोगी, मकरूह (घृणित), दुर्बल और नीच बनते बनते और ऐसे पतन के अन्य महा शोचनीय परिणामों को भोगने के अतिरिक्त **अपनी मूल निर्माणकारी शक्ति** को खोकर घुल घुल कर पूर्णत: नष्ट हो जाने के

लिए है और उसका धन और उसकी सम्पत्ति जैसे उसकी तबाही का साधन बनी, वैसे ही उन्हीं हालात में वह उसकी सन्तान या किसी और के पास जाकर भी उनकी भी इसी प्रकार की तबाही का कारण बनेगी। इस सत्य को अच्छी तरह याद रखो कि नेचर के विकास के कार्य में जो मनुष्य नीच अनुरागी होकर अपने धन या अपनी सम्पत्ति या अपनी मानसिक और शारीरिक शक्तियों को खर्च नहीं कर सकता और अपने भीतर किसी भले काम के लिए कोई सात्विक भाव या अनुराग नहीं रखता, उसका आत्मा कभी भी भला या बेहतर नहीं बन सकता क्योंकि नेचर के अटल नियमानुसार जो सच्ची और शुद्ध भलाई करता है, उसके आत्मा का सच्चा और शुद्ध भला होता है और जो **इस अटल नियम के विरुद्ध जिस हद तक सच्ची और पवित्र भलाई से घृणा करता और भागता है और मिथ्या और अहित के रास्ते पर चलता है, वह उसी हद तक अपने सार आत्मा को तबाह करता है और औरों के लिए हानिकारक और तबाहकुन (विनाशकारी) बनता है। तुम्हारा धन, तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारा शरीर और तुम्हारा दिमाग़ यदि नेचर के विकास के क्रम में सत्य और शुभ के लाने में साधन या सहाय न बन सके तो केवल यही नहीं कि उनकी कोई क़ीमत नहीं बल्कि नीच सुखों के दास बनकर जिस हद तक तुम उन्हें अपनी और औरों की तबाही में खर्च करते हो, तो उसी हद तक तुम्हारा अस्तित्व हानिकारक प्रमाणित होता है।** मैं चाहता हूं और बार बार चाहता हूं कि तुम यहां के सच्चे देव तीर्थ पर पहुंचकर जहां तक संभव हो देवात्मा का वह देव प्रसाद लाभ करो कि जिसका मैंने संक्षिप्त तौर पर अभी वर्णन किया है और यह उपलब्ध करो कि इस सच्चे और **दुर्लभ** देव प्रसाद से बढ़कर क्या तुम्हारे और क्या किसी भी मनुष्य आत्मा के लिए कोई और प्रसाद नहीं हो सकता।

(1922 के महोत्सव पर देवात्मा के उपदेश का एक अंश)

आत्मिक जीवन की रक्षा और उन्नति के सम्बन्ध में नेचर के चार बड़े बड़े नियम।

(स्थूल देह त्यागी विशेष सन्मान् के योग्य श्रीमान धर्म्म बल जी द्वारा लिखा हुआ)

अपने आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सत्य बोध लाभ करना और इस बोध की बिना पर भगवान् देवात्मा के साथ चार प्रकार की निम्नलिखित सर्वोच्च सात्विक शक्तियों के द्वारा जीवन्त और उन्नतशील सम्बन्ध स्थापन करना,

(1) देवात्मा के देवरूप के सम्बन्ध में **सत्य और अटल विश्वास भाव,**

(2) देवात्मा के देवरूप के सम्बन्ध में **सत्य और अटल श्रद्धा भाव,**

(3) देवात्मा के देवरूप से अति दुर्लभ आत्मिक कल्याण पाकर उनके प्रति **अटल कृतज्ञ भाव,**

(4) देवात्मा के देव प्रभावों के लिए **आकर्षण भाव,**

और ऐसे आत्म बोध और देवात्मा के साथ सच्चे ओर उन्नतशील सम्बन्ध के आधार पर

उनके देव प्रभावों में अधिक से अधिक निवास करना और जहां तक सम्भव हो, अपने जीवन को उन्हीं के नेतृत्व में चलाने का संग्राम करना।

अब जो लोग सचमुच अपने जीवन की रक्षा और उन्नति की कुछ भी सच्ची महानता और आवश्यकता का बोध रखते हों, उनके लिए अपने जीवन में उपरोक्त नियम की पैरवी करने की नितान्त आवश्यकता है।

इस सच्चाई को उत्तम रूप से प्रगट करने वाले भगवान देवात्मा के कुछ निहायत क़ीमती और महा हितकर वचन नीचे दर्ज किए जाते हैं :-

(आत्मिक बोध की नितान्त आवश्यकता के विषय में)

"1) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अपने अस्तित्व के विषय में सब प्रकार के **आवश्यक ज्ञान** के लाभ करने के लिए **भली भांत आकांक्षा** अनुभव करे।

2) स्वस्तित्व के सम्बन्ध में साधनकर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अन्य प्रत्येक विद्या वा अवगति की अपेक्षा अपने अस्तित्व के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने की **आवश्यकता और श्रेष्ठता** को विशेष रूप से अनुभव करे।

3) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अपने अस्तित्व की रक्षा और उसके **विकास** के लिए अपने हृदय में भली भांत **आकांक्षा** अनुभव करे।"

यही आत्मिक रक्षा और विकास मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य है, कि जिस के विषय में भगवान् देवात्मा फ़रमाते हैं :-

"4) स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधनकर्ता के लिए **आवश्यक** है, कि वह इस सत्य को पूर्ण रूप से उपलब्ध करे, कि प्रत्येक नीच गति से **मोक्ष** और प्रत्येक उच्च गति के द्वारा अपने आत्मा का **विकास** साधन करना ही उस का **मुख्य लक्ष्य** है, और जहां तक विद्या, धन, सम्पद, मान्, यश, पद, उपाधि, सन्तान् वा अन्य सम्बन्धी और सुख दायक पदार्थ आदि उसके मुख्य लक्ष्य के अनुकूल या उसमें सहायक हों, वहां तक ही उनकी प्राप्ति वा उनका सम्बन्ध उचित है, उससे अधिक नहीं।"

अब जो जन उपरोक्त प्रकार के सच्चे आत्मिक बोध से **शून्य** हैं, वह निश्चय बहुत कृपा पात्र अवस्था में हैं। इस विषय में परम पूजनीय भगवान् देवात्मा यह फ़रमाते हैं :-

"मनुष्य होकर जो जन अपने ही अस्तित्व के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने की आकांक्षा नहीं रखता, उससे बढ़कर और कृपा पात्र कौन हो सकता है?"

इसके विरुद्ध सच्चा सौभाग्यवान जन कौन है, उसके विषय में भगवान् देवात्मा यह फ़रमाते हैं

"मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य बोध और सत्य ज्ञान लाभ करने के योग्य होना, और उसकी प्राप्ति का शुभ अवसर पाना उसका महा श्रेष्ठ अधिकार है।"

यह सत्य वचन इस हक़ीक़त को भली भान्त प्रगट करते हैं, कि मनुष्य के लिए अपने आत्मा के विषय में सच्चा बोध पाने और उसकी आवश्यक रक्षा और उन्नति करने की नितान्त आवश्यकता है, और यही उसके जीवन का मुख्य

लक्ष्य है; इसलिए नितान्त आवश्यकता है, कि हम लोग इस हक़ीक़त को अधिक से अधिक उज्जवल रूप में उपलब्ध करके उससे लाभ उठाएं।

अब इस से अगला प्रश्न यह है, कि जो जन कुछ भी अपने आत्मा की रक्षा और इसके विकास के सच्चे आकांक्षी हों, उनकी यह अति आवश्यक आकांक्षा किस प्रकार पूरी हो सकती है? इसका ठीक उत्तर यही है, कि देवात्मा के सम्बन्ध को मुख्य सम्बन्ध बनाने और रात दिन उन्हीं के देव प्रभावों में वास करने और उनके नेतृत्व में अपना जीवन बसर करने का संग्राम करने से। इन विषयों में परम पूजनीय भगवान् देवात्मा यह फ़रमाते हैं :-

"देव समाज का सबसे बड़ा और मुख्य उद्देश्य यही है, कि पहले तुम देव धर्म्म प्रवर्तक के साथ अपने सम्बन्ध को जीवन्त रूप से स्थापन करने की आवश्यकता को अनुभव करो, और उसके अभिलाषी बनो। ऐसी अभिलाषा के पूर्ण करने के लिए तुम्हें जिस-जिस ज्ञान की आवश्यकता है, जिस-जिस साधन की ज़रूरत है, उसके जानने, सीखने और पूरा करने की कामना करो।"

एक और जगह भगवान देवात्मा इस विषय में यह फ़रमाते हैं :-

"देवात्मा के साथ अपने आत्मा के सम्बन्ध को पहचानने और उनके साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने के योग्य होना किसी भी मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अधिकार और लाभ है।"

अब प्रश्न यह है, कि कौन से जन भगवान् देवात्मा के साथ अपना सच्चा और उन्नतशील सम्बन्ध बना सकते हैं, उनके लिए एक आवश्यक शर्त यह है :-

"जो लोग भगवान् देवात्मा के प्रति अनुराग को अपने आत्मा के लिए **जीवन दायक प्राण** जान कर उसकी प्राप्ति, रक्षा और उन्नति को अपना **परम लक्ष्य** अनुभव करते हों और उनके प्रति अपनी श्रद्धा और अपने आकर्षण की उत्पत्ति और उन्नति के लिए उनकी ज्योति में उन्हें जिस-जिस सम्बन्धी, वा सुख, वा अभ्यास, वा रुचि, वा पदार्थ आदि के त्याग करने की आवश्यकता बोध हो, वह उसे त्याग कर सकते हों, और किसी बात के द्वारा उन से फटने और दूर होने में अपने आत्मा की **मृत्यु अनुभव** करते हो।"

प्रिय पाठकगण! हम लोग देखें, कि क्या हम देवात्मा के अनुराग को अपने जीवन का परम लक्ष्य अनुभव करते हैं और किसी दशा में भी उनसे दूरी को हम अपने आत्मा के लिए **मृत्युदायक** बोध करते हैं? यदि ऐसे लक्षण हमारे जीवन में पाए न जाते हों, तो निश्चय हमारी अवस्था बहुत कृपा पात्र है।

इससे आगे इसी सिलसिले में हम लोगों को जो एक और हक़ीक़त अच्छी तरह से जानने की आवश्यकता है, वह यह कि जैसे शारीरिक जीवन की रक्षा और भलाई के लिए एक आवश्यक शर्त यह है, कि हम हर समय ताज़ा वायु में सांस लें, और विषाक्त वायु से बचें, वैसे ही आत्मिक जीवन के लिए हर समय देव प्रभावों में निवास करने की नितान्त आवश्यकता है। देव प्रभावों की ऐसी महिमा और आवश्यकता के विषय में देव प्रभावों के दाता स्वयं भगवान् देवात्मा यह फरमाते है:-

"भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह इस सत्य को भली भांत जाने और उपलब्ध करे, कि जिस प्रकार उसे अपने भौतिक शरीर के जीवित रखने के लिए अन्न, जल, और वायु आदि ग्रहण करने और मल मूत्र आदि जो-जो कुछ उसके जीवन के लिए हानिकारक है, उसके त्याग करने की आवश्यकता है, उसी प्रकार उसे अपने आत्मा को जहां तक सम्भव हो, **जीवन दायक उच्च भावों में विकसित करने और जीवननाशक नीच अनुरागों और नीच गतियों से मोक्ष देने के लिए देव जीवन प्राप्त भगवान् देवात्मा के जीवन प्रद देव प्रभावों को ग्रहण करने और उसके जो-जो अभ्यास वा भाव, जहां तक उनके ग्रहण करने में प्रतिबन्धक हों, वा उसके आत्मिक जीवन के लिए हानिकारक हों, उनके वहां तक त्याग करने की आवश्यकता है।**"

"भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह इस सत्य को भली भांत जाने और उपलब्ध करे, कि उसके लिए भगवान् देवात्मा के **देव प्रभावों के लाभ से बढ़कर और कोई लाभ और सौभाग्य नहीं, और उनके देव प्रभावों से वंचित होने से बढ़कर और कोई हानि वा और कोई दुर्भाग्य नहीं।**"

अब प्रश्न यह है, कि देव प्रभावों के लिए आकर्षण का अति मूल्यवान भाव किसी अधिकारी जन के हृदय में कब बढ़ सकता है? इसके उत्तर में एक आवश्यक बात यह है, कि

"किसी अधिकारी जन में भी देवात्मा के देव प्रभावों के प्रति उतने ही अंश आकर्षण बढ़ सकता है, कि जितने अंश उसके आत्मा में एक या दूसरे प्रकार का **पतनकारी सुख अनुराग घट सकता है,** और उस पतनकारी सुख अनुराग के प्रति उसमें **विकर्षण** उत्पन्न हो सकता है। परन्तु यदि उसमें अपने **किसी भी पतनकारी सुख अनुराग के प्रति कोई विकर्षण वा घृणा भाव उत्पन्न नहीं, और अपने किसी पतनकारी विश्वास वा अपनी किसी पतनकारी चिन्ता वा अपने किसी पतनकारी वचन या अपनी किसी पतनकारी अन्य क्रिया के प्रति कोई सच्चा विकर्षण भाव जाग्रत न हो,** तो फिर नेचर के आत्मिक जगत् के अटल नियमानुसार उसमें देवात्मा के देव प्रभावों के लिए किसी **आकर्षण भाव की उन्नति भी सम्भव नहीं।**"

प्रिय पाठकगण! अब हम लोग सोचें, कि हमें अपने आत्मिक जीवन की रक्षा और उन्नति के लिए आत्मिक जीवन के विषय में **सच्चा बोधी** बनने और **देवात्मा के साथ** नाना सर्वोच्च सात्विक शक्तियों की बिना पर अपना **सच्चा और उन्नतशील** सम्बन्ध स्थापन करके हर समय उनके देव प्रभावों में वास करने, और उन देव प्रभावों के अनुसार जीवन व्यतीत करने की जो नितान्त आवश्यकता है, उसके विचार से हम किस अवस्था में हैं? यदि हम देव-प्रभावों की प्राप्ति या देव प्रभावों में निवास करने की उपरोक्त विशेष आवश्यकता और महिमा को उपलब्ध नहीं करते, तो निश्चय हम लोग अपने जीवन के सम्बन्ध में बहुत बेसुध, और अपने जीवन के बहुत बड़े शत्रु हैं। काश कि हम लोगों पर यह हक़ीक़त अधिक से अधिक उज्जवल रूप से प्रकाशित हो सके, और हम उससे भली भांत लाभ उठा सकें।

स्वास्तित्व के सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधन

(श्रद्धेया कुमारी डा० प्रेम देवी जी के एक उपदेश का सारांश)

आजकल स्वास्तित्व के सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधनों के दिन हैं। स्वास्तित्व के सम्बन्ध में साधन क्या है? अपने अस्तित्व के विषय में विचार करना अर्थात् अपनी परीक्षा करना, हानि या घाटे से अपने आप को बचाने के लिए यत्न करना, नीच गति के महाभयानक फलों से अपने आप को बचाने के लिए सच्चा संग्राम करना, नीच गति की ओर ले जाने वाले आत्माओं से अपने नीच सम्बन्ध को काट लेना, नीच गति कराने वाले अभ्यासों से अपने आपको बचाकर रखना, नीच गति मूलक चिन्ताओं और क्रियाओं से अपनी रखवाली करना, नीच गति दायक प्रभावों से अपनी रक्षा करना, उच्च गति मूलक साधनों वा संग्रामों में प्रवृत रहना, अपना समय निकम्मा रहकर बर्बाद न करना, अपने समय को बहुत क़ीमती समझ कर उसे उच्च गति दायक सम्बन्धियों के निकट होने और सम्बन्ध को गहरा करने में ख़र्च करना, धर्म्म जीवन सम्बन्धी उच्च भावों को अपने भीतर जाग्रत करने के लिए अधिक से अधिक संग्रामों में से गुज़रना, शारीरिक जीवन की बहुत थोड़ी आयु को अपने सार आत्मिक जीवन के लिए सहायकारी बना लेना, अपनी सारी ताक़तों को अपने आत्मिक कल्याण के लिए सहायकारी बनाकर उच्च जीवन की तरफ़ क़दम उठाते चले जाना, उपरोक्त सच्चे धर्म्म जीवन को लाभ करना अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बना लेना, धर्म्म जीवन दाता भगवान् देवात्मा और अन्य सच्चे सहायकारी सम्बन्धियों के साथ अपना सम्बन्ध और पवित्र स्नेह बढ़ाने के लिए लगातार यत्नों में लगे रहना, धर्म के महा कठिन मार्ग में अपने आप को दुर्बल और अज्ञानी जानकर और अपने हितकारियों को अपना रक्षक और हितकारी अनुभव करके उनका सच्चा आज्ञाकारी बनने के लिए सदा तैयार रहना, और उनकी आज्ञा को पालन करना, यह है स्वास्तित्व के सम्बन्ध में सच्चे साधन।

प्रिय धर्म सम्बन्धियों! अपने- अपने जीवनों की परीक्षा करके देखो, कि तुम जो स्वास्तित्व के साधनों में प्रवेश कर चुके हो, आया तुम इस विषय में कोई साधन करते हो? आया तुम इस प्रकार के साधनों के लिए कोई यत्न करते हो? उसके लिए संग्राम करते हो? यह तो अति कल्याणकारी और अति श्रेष्ठ पाठ और विचार के साधन आरम्भ हुए हैं, यदि इन साधनों को करने के योग्य न बन सके, तो फिर और किसी सम्बन्धी के सम्बन्ध में साधन करने के भी योग्य नहीं हो सकते। हां, अपने अस्तित्व को ही यदि विनाश कर देने वाले सामानों में नष्ट कर दिया, तो और सम्बन्धियों के सम्बन्ध में साधन कौन करेगा? स्वास्तित्व के सम्बन्ध में यह एक ऐसा साधन है, जिसका करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हम सब के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि यदि हम यह जान चुके हैं, कि हमारे अस्तित्व में मुख्य वस्तु आत्मा है, हमारा आत्मा ही अगर जीवित न रहे, तो इस नेचर की सब चीज़ें मिलकर भी किस काम की, फिर इस नेचर के सारे पदार्थ किस काम के, हमारे सब धन, हमारे सब दुनियावी सम्बन्ध हमारे किस काम के? इसलिए स्वास्तित्व सम्बन्धी

साधनों के लिए जीवन दाता के देव प्रभावों को लाभ करने वाले साधन करना, उनके साथ हृदयगत सम्बन्ध सूत्रों को गाढ़ करना, उनके अधिक से अधिक निकट होने के लिए यत्न करना हमारे लिए सबसे बढ़कर साधन है, हमारे लिए सब से बढ़कर कमाई की वस्तु है। ऐसा हो, कि हम आत्मिक कल्याण के अभिलाषी होकर सच्चे दिल से जीवन दाता, परम हितकर्ता भगवान् देवात्मा के चरणों से अपने हृदय को जोड़ सकें, और उनके साथ सम्बन्ध को बढ़ाने वाले और अपने अनुराग को उन्नत करने वाले सच्चे साधनों में से गुज़र सकें। जो सामान वा सम्बन्धी उनके साथ सम्बन्ध गहरा करने में रोक बनें, वह चाहे नज़दीकी रिश्तेदार हों, चाहे हमारी मां हो, चाहे हमारा बाप हो, चाहे हमारी पत्नी हो, चाहे हमारी बहन हो, चाहे हमारा घर हो या हमारी कोई सम्पत्ति हो, चाहे हमारा मान और यश हो, वह सब हमारे आत्मा के सम्बन्ध में हानिकारक हैं, उन्हें ऐसे ही रूप में देखकर हम सब से बढ़कर अपने जीवन दाता भगवान् देवात्मा को अपने हृदय पर अधिकार दें। उनका ऐसा ही शुभाशीर्वाद इस समय हमें प्राप्त हो।

आपकी छोटी सी मदद किसी के जीवन का कांटा बदल सकती है

मानवता में चारों ओर स्वार्थ का राज्य है। स्वार्थ मनुष्य को इतना अन्धा कर देता है कि अक्सर उसे अपने निकटी, प्यारे और उपकारियों के भी दु:ख व अभाव नज़र नहीं आते और वह उनके लिए भी दु:खदाई और क्लेशदायक बन जाता है। ऐसे स्वार्थी संसार में कहीं कहीं ऐसे हमदर्द अथवा पर-अभाव-निवारण का भाव रखने वाले व्यक्ति भी मिल जाते हैं, जो अपनी सहायता से किसी बेचारे अथवा गरीब व्यक्ति की ज़िन्दगी का कांटा बदल देते हैं। कुछ घटनाएं मेरे सामने उन खुशनसीब व्यक्तियों की आ रही हैं जिन्हें खुशनसीबी से ऐसे मेहरबानों के सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिला और वह अपनी ज़िन्दगी में अच्छी सफलता प्राप्त करने के योग्य हुए।

(1) एक छोटा सा गरीब बच्चा औरों के बूट पालिश करके अपना बचपन खो रहा था। कितने आदमी उससे बूट पालिश करवाते और पैसे देकर चले जाते। उसका कितना बड़ा सौभाग्य कि एक दिन एक सुहृदय स्त्री उससे बूट पालिश करवा रही थी, तो वह पूछने लगी कि तुम पढ़ने क्यों नहीं जाते? बच्चे ने अपनी गरीबी के कारण स्कूल का खर्चा उठाने में असमर्थता जताई। तब उस मेहरबान ने कहा कि यदि वह पढ़ना चाहता है, तो वह उसका सारा खर्चा उठाने के लिए तैयार है। बच्चा खुशी से झूम उठा और उस मेहरबान ने अपना वायदा पूरा किया। बच्चा बुद्धिमान था, वह पढ़ लिखकर बहुत योग्य और सफल व्यक्ति बन गया। हम सोच सकते हैं कि अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार जब हम किसी का अभाव निवारण करते हैं तो कैसे उसके जीवन का कांटा बदल सकता है।

(2) एक पिता जो चपरासी थे, वह प्रिंसीपल

के पास यह बेनती करने आए कि मेरी बेटी बहुत होशियार है, परन्तु मैं आपके स्कूल का खर्चा नहीं उठा सकता। प्रिंसीपल ने अश्वासन दिया कि यदि वह पढ़ाई में होशियार है तो न केवल उसकी फीस माफ की जाएगी, उसकी किताबों आदि का खर्चा भी हम देंगे। वह लड़की आठवीं कलास में भी मैरिट में आई और दसवीं कलास में भी उसने टॉप किया। उसके मैरिट के कारण उसे चण्डीगढ़ आर्किटेक्ट कॉलेज में दाखिला मिल गया, परन्तु उसका पिता तो वह खर्चा उठाने में पूर्ण रूप से असमर्थ था। फिर प्रिंसीपल और दो और मेहरबान स्त्रियों ने मिलकर उसका खर्चा उठाने का फैसला किया। वह लड़की आर्किटेक्ट बन गई और मैरिट पर ही अमरीका चली गई और बहुत बड़े शिक्षित जन से उसकी शादी हो गई। कुछ मेहरबानों द्वारा उसके आर्थिक अभाव दूर करने से वह क्या से क्या बन गई। ऐसे ही लाखों बच्चे अभावों में ही रुल जाते हैं, परन्तु सौभाग्यवान हैं वह जिन्हें ऐसे हितकारी मिल जाते हैं।

पिछले दिनों दैनिक भास्कर में राजपाल यादव, जो आजकल सफलता की कई सीढ़ियां चढ़ चुके है, उनके विषय में एक लेखक ने लिखा। उनकी स्वयं की एक पिक्चर 'पता लापता' के म्यूजिक रिलीज़ के लिए प्रोग्राम रखा था। जिसमें लेखक भी शामिल था। अमिताभ बच्चन साहिब को भी बुलाया गया था। ऐसे दिग्गजों के बीच स्टेज पर उन्होंने अनाऊंस किया कि मुझे इस लाईन में लाने वाला एक रिक्शेवाला है। जब मैं दसवीं में पढ़ता था, तो एक दिन रिक्शेवाले मेरे दोस्त ने मुझे कहा कि तुम्हें एक्टिंग का शौक है, मुझे एक नाटक कंपनी का पता है, मैं तुम्हें वहां ले जाता हूं। उसने मुझे रिक्शे में बिठाया और वहां ले गया। उसके वहां ले जाने से मेरे जीवन का कांटा बदल गया।

फिर पता लगा कि राजपाल ने उस रिक्शेवाले को जहाज की टिकट दी, बहुत अच्छे होटल में ठहराया। इसके साथ साथ जिन जिन जनों ने उसकी कदम कदम पर सहायता की चाहे वह कितने ही गरीब हों, उसके अध्यापक थे, कुछ नाटकों में उसे काम दिलवाने वाले थे, पिक्चरों में ले जाने वाले थे, सबको जहाज की टिकटें दीं और अच्छे होटलों में ठहराया। सबको अमिताभ जी के द्वारा सोने के तगमें दिए और उनके गलों में डालकर उनका सम्मान किया। लेखक ने लिखा है कि यह नज़ारा देखकर मैं भाव विभोर हो गया और सोचने लगा कि अच्छे एक्टर होने के साथ-साथ राजपाल बहुत अच्छा इन्सान भी है।

एक रिक्शे वाले ने अपने सुझाव से और अपनी रिक्शा में ले जाकर राजपाल यादव के जीवन का कांटा बदल दिया।

नारायण मूर्ति Infosys कंपनी के संस्थापक वा चेयरमैन हैं। बहुत साधारण घर में भारत में जन्मे परन्तु अपनी आसाधारण योग्यता से उन्होंने सफलता की ऊंचाईयों को छुआ है, वह कितने लाख करोड़ के मालिक हैं। बात यहां उनकी धर्मपत्नी की है, जिनके विषय में मैंने एक जगह पढ़ा था कि वह भी एक गरीब परिवार की बेटी थी। एक बार वह स्टेशन पर कैसे आई, यह तो नहीं पता, परन्तु उसके पीछे कुछ गुण्डे लग गए, जवान थी, डरकर वह गाड़ी में चढ़ गई और एक सीट के नीचे छुप गई। सीट के ऊपर एक हमदर्द प्रोफेसर महिला बैठी थी, उसने लड़की को बाहर निकाला और उससे पूछा कि उसने

कहां जाना है, परन्तु न उसे जाने का ठिकाना पता था और न ही उसके पास पैसे थे। प्रोफेसर के कहने पर वह उनके साथ जाने को तैयार हो गई। उस महिला ने उसका टिकट कटवाया और अपने साथ ले जाकर एक महिला आश्रम में रख दिया और उसे पढ़ाने का क्रम आरम्भ किया। उनका आपस का सम्पर्क लड़की के 10वीं पास तक रहा, फिर उनका आपस का सम्पर्क टूट गया। वह एक मेधावी छात्रा थी, उसने तरक्की की और वह अमरीका पहुँच गई। बाद में वह नारायणमूर्ति के सम्पर्क में आई और उनकी शादी हो गई। अब वह बहुत अमीर और योग्य जन की पत्नी है।

एक बार किसी सेमीनार पर वह प्रोफेसर महिला अमरीका गई और एक होटल में ठहरी। जब वह होटल का बिल चुकाने लगी, तो अकाउंटैंट ने कहा कि आपका बिल तो उस स्त्री ने (ईशारा करके कहा) चुका दिया है। वह उस महिला की ओर मुड़ी और बिल चुकाने का कारण पूछा। उस औरत ने प्रोफेसर को प्रणाम किया और कहा कि मैडम यह उस ट्रेन की जो आपने टिकट ली थी, उसका कर्जा है। यह कौन थी? वही सुधा जो अपने फटे पुराने कपड़ों से बिना टिकट घबराई हुई गाड़ी पर चढ़ी थी। उस प्रोफेसर की थोड़ी सी सहायता ने उसकी ज़िन्दगी का कांटा बदल दिया।

ऐसी संसार में बहुत घटनाएं होती हैं। अब्राहिम लिंकन अमरीका के प्रैज़ीडैन्ट बन गए थे। जैसे वह गरीब परिवार से थे, वैसा ही गरीब उनका मित्र था। जब इब्राहिम लिंकन अमरीका के प्रैजीडैण्ट बन गए तो वह गरीब दोस्त उनके पास मदद मांगने आया, उन्होंने 5 डालर उसको दिए और कहा कि इसके तुम फल खरीदो और जो मुनाफा हो वह जमा करो। फिर 5 डालर के फल खरीदो। उसका काम धीरे-धीरे इतना चला कि वह बागों का मालिक बन गया। 5 डालर की मदद से उसकी जिन्दगी का कांटा बदल गया। इस प्रकार हमें भी किसी अधिकारी जन का अभाव पूर्ति का चांस मिले, तो उसे हाथ से न जाने दें, पता नहीं हमारी थोड़ी सी सहायता से उसके जीवन में कितना परिवर्तन आ जाए।

-सुरजीत बराड़

हमारे रिश्ते बिगड़ रहे हैं।

हमारे जीवन की शुरूआत अपने माता-पिता से होती है। हमारे माता-पिता हमारे जन्मदाता हैं। उन्होंने हम पर सदा स्नेह लुटाया है। हज़ारों मुसीबतें सहकर वह हमारी पालना करते हैं। वह हमें बोलना, चलना, उठना, बैठना, कपड़े पहनना आदि सिखाते हैं। वह हमें स्कूल भेजते हैं और हमें पढ़ाते हैं। खुद भूखे रहकर भी हमारा पेट पालते हैं। परन्तु अक्सर माता-पिता अपने बच्चों के हाथों दुख पाते हैं।

एक विद्यार्थी का पिता साधारण ग्रामीण था। वह पिता अपने ग्रामीण वेष में ही अपने लड़के से मिलने उसके कॉलेज के हॉस्टल में आया। लड़के ने जब अपने पिता को साधारण कपड़ों में आते देखा तो उसके दिल पर आघात सा लगा और उसने झुंझला कर पिता से कहा कि जब मेरे साथी लड़कों को यह पता लगेगा कि एक भद्दे कपड़े पहनने वाला व्यक्ति मेरा पिता है, तो वह मुझे क्या कहेंगे? दिन भर उस लड़के

ने अपने पिता को अपने कमरे से बाहर न जाने दिया और स्वयं बाहर जाता तो पिता को कमरे में बंद करके बाहर से ताला लगा कर जाता, मानों अपने वृद्ध पिता को पिंजरे में कैद कर दिया हो। रात को उसने पिता को चुपचाप बाहर निकाला और स्टेशन पर पहुंचा दिया। वह एक कृतघ्न बेटे की घटना है।

एक गांव में तीन बेटे रहते थे। मां ने उन्हें खूब लाड प्यार से पाला। उन्हें खूब खिलाया पिलाया। उन्हें अपने पांव पर खड़ा किया। उनकी शादीयां की। परंतु जब मां बूढ़ी हुई तो बच्चों पर वही उपकारी मां बोझ जैसी बन गई। कभी मां पानी मांगती, कभी दवाई और कभी कुछ और कहती, तो बच्चे परेशान हो जाते। उन्होंने सोचा कि मां से पीछा छुड़वाना चाहिए। वह तीन भाई और उनकी पत्नियां घर पर ताला लगाकर और मां को घर में बंद करके चले गए, ताकि पीछे से मां भूखी प्यासी तड़प तड़प कर मर जाए। यह तो मात्र चंद घटनाएं हैं, परन्तु हमारे आसपास हमारे घरों में माता - पिता के अपमान की, उनको दुखी करने की घटनाएं रोज होती रहती हैं।

हमारे माता - पिता के बाद हमारे भाई - बहन हमारे सबसे निकटी रिश्तेदार हैं। घरों में अगर विवाह शादी वा अन्य किसी खुशी व गमी के मौके पर भाई - बहन मिलते हैं, तो उनके रिश्ते अक्सर खुशनुमा नहीं होते। बल्कि उनके पास शिकायतों का दफ्तर होता है, कि आप तो हमें पूछते तक नहीं। आपने तो फलां रिश्तेदार को आगे आगे किया हुआ है। भाई भाई अक्सर जमीन के बंटवारे में एक दूसरे से फट जाते हैं और दुश्मन बन जाते हैं। उन्हें यह भूल जाता है कि हमारी दुश्मनी से हमारे माता - पिता कितने दुखी होते होंगे। पैसों और जायदाद के लिए खून के रिश्ते अक्सर खून के प्यासे हो जाते हैं। दरअसल अभी मानव सभ्यता इतनी विकसित नहीं हुई कि वह पैसों से ज्यादा रिश्तों को महत्व दे सके।

एक छोटे शहर में दो भाई रहते थे। एक भाई के घर पर भैंस थी, जबकि दूसरे भाई के घर पर नहीं थी। एक दिन उस भाई का चेहरा उतरा हुआ था कि जिसके घर पर भैंस नहीं थी, किसी ने जब यह पूछा कि तुम उदास क्यों लग रहे हो? तो उसने कहा कि आज जब मेरी भावजा दूध की बाल्टी अपने घर लेकर जा रही थी तो हवा से कपड़ा उड़ गया और मेरी नज़र दूध पर पड़ गई। मैं दुखी हो रहा हूं कि हमारे घर पर दूध नहीं हैं और हम बाज़ार से चाय के लिए दूध खरीद कर लाते हैं। पूछने वाले ने कहा कि तुम भी घर पर गाय या भैंस रख लो, तो उसने जवाब दिया कि मेरे को तो उस समय तक शांति नहीं मिलेगी जब तक मुझे यह ख़बर ना मिल जाए कि भाई की भैंस को सांप काट गया है और वह मर गई है। अपने ही भाई की उन्नति को देखकर कैसा ईर्ष्या का भाव और कैसी खराब सोच!

हमारे समाज की कड़वी सच्चाई यह है कि पति - पत्नी का रिश्ता शुरू ही स्वार्थ से होता है। लड़के वाले लड़की वालों से दहेज लेते हैं और लड़की वाले देखते हैं कि लड़का अमीर है या नहीं वह अच्छे पैसे कमाता है या नहीं। विवाह से पहले लड़के व लड़कियों की कुंडलियां तो मिलाई जाती हैं परंतु रिश्तों के लिए ज़रूरी बातों को ignore कर दिया जाता है।

टॉलस्टॉय जो महात्मा गांधी के आध्यात्मिक गुरू थे तथा प्रसिद्ध दार्शनिक थे,

किसी बात को लेकर उनका पत्नी से मनमुटाव हो गया। टॉलस्टॉय अपना सारा धन परोपकार में लगाना चाहते थे। उनकी पत्नी इसका विरोध करती थी। दोनों ने अपनी - अपनी दैनिक डायरी बना रखी थी जिसमें वह एक दूसरे के दोष लिखते थे। अब प्रकृति का यह नियम है कि गुण चिंतन से संबंध मीठे बन जाते हैं और परस्पर दोष देखने व लिखने से संबंध कड़वे बन जाते हैं। दोनों के संबंध इतने कड़वे बन गए कि वह एक दूसरे का मुंह तक नहीं देखना चाहते थे। एक सख्त सर्दी की रात टॉलस्टॉय घर से निकल गए और घर से दूर एक स्टेशन पर सर्दी में ठिठुर कर मर गए। उनकी जेब से एक पर्ची मिली जिसमें लिखा था कि मेरी अर्थी के निकट मेरी पत्नी को ना आने दिया जाए। अब यदि बड़े बड़ों का यह हाल हो सकता है तो साधारण जन किस अवस्था में होंगे?

हमारे वैज्ञानिक इस युग में चांद पर चले गए हैं। वह वहां पर पानी ढूंढ रहे हैं। वहां पर रहना और बसना चाहते हैं, परन्तु अफसोस यह है कि हमें अभी तक इसी पृथ्वी पर सुख शांतिपूर्वक रिश्तों में रहना और बसना नहीं आता। घर टूट रहे हैं, रिश्ते बिखर रहे हैं। घर टूटने का मुख्य कारण स्वार्थ होता है जब माता - पिता बच्चों की कोई इच्छा पूरी नहीं करते, जब भाई - भाई जमीन जायदाद के लिए स्वार्थी बन जाते हैं जब पति - पत्नी एक दूसरे की बात नहीं मानते तो घर टूट कर बिखर जाते हैं। यह सब दुःख किसी देवी देवता ने नहीं भेजे, बल्कि हमारे नीच जीवन ही अपने निकटी सम्बन्धों को भी दुःखी करता हैं।

रिश्तों को ठीक करने का एक तरीका यह है कि हम अपना स्वार्थ त्याग करें। हमें रिश्तों को बेहतर करने और एक श्रेष्ठ परिवार बनाने की बहुत बड़ी जरूरत है। अगर हम हमारे माता - पिता, हमारे भाई बहनों, अपने जीवनसाथी से पाई हुई सेवाएं याद रखें और बदले में उनकी सेवा करें तो हमारा संबंध परस्पर के लिए हितकर बन जाता है। हमें दूसरों द्वारा की गई गलतियों को भूलकर उन्हें सच्चे दिल से माफ करना सीखना पड़ेगा। गुस्से की गांठे हमें अंदर से जलाकर राख कर देती हैं। हमें आपसी संबंधों में एक दूसरे के गुण देखने का प्रयास करना चाहिए। इससे नफरत कम होती है। हर बुरे से बुरे व्यक्ति में भी कुछ गुण मौजूद होते हैं परन्तु हमारा ध्यान अक्सर सिर्फ उसकी गलतियों और बुरे व्यवहार की तरफ ही जाता रहता है जबकि हमें उनके अच्छे गुण देखने का भी प्रयास करना चाहिए। हमारे संबंध खराब होने का कारण सिर्फ दूसरे नहीं होते उसमें हमारा भी हाथ होता है। हमें अपनी गलतियों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। अपने खराब सलूक के लिए माफी मांगने, अपनी गलती को ठीक करने से हम छोटे नहीं होते, बल्कि हमारी नम्रता बढ़ती है और हम अच्छे इंसान बनने की ओर चलते हैं।

नेचर के विकास क्रम में देव समाज संस्थापक ने सैकड़ों बिगड़े बच्चों को माता - पिता के श्रवण कुमार बेटे और बेटियां बनाया है। सैकड़ों लड़ने वाले भाइयों और बहनों के रिश्तों को मीठा बनाया है। सैकड़ों घमंडी पतियों को पत्नियों के सामने झुकने और माफी मांगने के योग्य बनाया है। काश! वह जैसी रिश्तों के संबंध में शिक्षा देते हैं वह हमें समझ आ सके।

- गौतम गोनियाना

उच्च संगत से लाभ

एक सेवक लिखते है :-

देवात्मा के देव प्रभावों को पाकर निम्नलिखित विषयों में लाभ हुआ है।

1- भगवान् देवात्मा के अद्वितीय कार्य की महिमा अधिक सन्मुख आई है, विशेष कर भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों से विश्वगत नाना सम्बन्ध जैसे मीठे और हितकर बन रहे हैं, उस दृश्य ने मेरे दिल पर बहुत गहरा असर किया है।

2 - भगवान् देवात्मा के अद्वितीय देवरूप, मनुष्य आत्मा और नेचर के सम्बन्ध में अपने ज्ञान को बढ़ाने का भाव पैदा हुआ है।

3 - यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई है, कि मैं अपने भावों से ही परिचालित होता हूं। यदि मैं नीच भावों का बन्धुवा रहूंगा, तो उससे अपना और औरों का नाश करूंगा। उच्च भावों से ही उच्च गतियां कर सकूंगा, इसलिए अपने जीवन को बेहतर बनाने की नितान्त आवश्यकता है, और ऐसा करने के लिए धक्का लगा है।

4 - निन्दा करने, किसी की नीचताओं को सन्मुख लाकर उसे घृणा करने और अपने कार्यगत समय को भी गप्पों में खो देने की नीच गतियां घृणित रूप में दिखाई दी हैं, और उन से बचने के लिए बल मिला है।

5 - स्वाद अनुराग और आलस्य अनुराग के कारण मैं जो नीच गतियां कर जाता हूं, उनको घृणित रूप में देखने का अवसर मिला है।

6 - अपने भीतर कर्तव्य पालन और कृतज्ञ भावों की वहीनता दिखाई दी है और उसको दूर करने के लिए धक्का लगा है, आदि - आदि।

मैं इस सारे लाभ के लिए परम पूजनीय भगवान् देवात्मा और अन्य सहायकारियों को बहुत - बहुत धन्यवाद देता हूं।

धर्म विकासालय की मोक्ष और उच्च जीवन दायक शिक्षा और उच्च संगत सम्बन्धी उच्च प्रभावों को लाभ करने और उनके महान कार्य में सेवाकारी बनने की योग्यता प्राप्त करने के लिए उसके अधिवेशनों में योग दो व नियमित विकासार्थी बनो।

बाकि पृष्ठ 20

इंसान परोपकारी बन गए, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, श्रीमती सरस्वती देवी कनल के परोपकारी जीवनों को बताया गया। देव समाज से कट जाने से सभापति जी के शहर के एक व्यक्ति की कैसे हानि हुई, सेठ नानूमल की क्या दशा हुई उसका वर्णन किया गया। सभा बहुत प्रभावशाली थी कितने ही जन पाक आंसू बहा रहे थे।

22.07.2024, सुबह 8.00 बजे।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सभापति जी ने सेवकों के गुणों और उपकारों का वर्णन किया। उन्होंने उनकी देव समाज के प्रति सेवाओं का वर्णन किया। उनके अनमेल को कैसे दूर करके उनका संबंध हितकर हो सकता है उसका नक्शा पेश किया गया। छोटी सी सभा बहुत अच्छी और प्रभावशाली थी। चार बार जय ध्वनि के साथ यह उत्सव संपन्न हो गया।

एक नन्हा प्रयास

दो - तीन महीनों से श्रीमान गौतम जी व अन्य कई धर्म - सम्बन्धियों से मेरी बातचीत चल रही थी कि हम देव समाज के लिए क्या कर सकते हैं.....? मैं बठिंडा में पुराने धर्म सम्बन्धियों के मिलने के लिए विचार करता था। श्रीमान गौतम जी भी कई जनों से मिलने का विचार कर रहे थे *सोने नाल ना पित्तल रलदा, सुरमें नाल ना कोले, कावां दी की कदर मुहम्मद, जित्थे बुल बुल बोले।*

जहां समाज की बड़ी - बड़ी योग्य हस्तियों ने जिनकी बाणी बुलबुल जैसी मीठी व उच्च भावों से भरी हुई और केवल परहित को देखती थी, जहाँ सम्मान एवं श्रद्धा के योग्य बड़े श्रीमान जी (माननीय बलदेव सिंह) जी गए हों, वहां मुझ कौवे जैसे स्वार्थी इन्सान की कौन सुनेगा..... फिर भी अपनी तुच्छ योग्यता को लेकर हम तीन साथी सेवक मैं, श्रीमान गौतम जी व श्रीमान सुखदेव जोसन जी 18 जून से 21 जून तक प्रचार दौरे में गए। इसमें श्री गंगानगर, पदमपुर, गजसिंहपुर के अलावा और एक नई जगह गए। इस दौरान सभाएँ हुई, विजिट किया, श्रद्धालु जनों और सेवकों के निवास तक पहुँचकर उनसे मुलाकात की। सभी जगह नेचर की सहायकारी शक्तियों की सहायता से हितकर खुशियाँ प्राप्त हुई..... एक - एक जगह जाते हुए हमारा शुभकामना का साधन चला..... सभाओं द्वारा हम सबको अच्छी प्रेरणाएं मिलीं। 3 - 4 जगह सुनने वालों में नए जन भी शामिल हुए, उन्होंने भी शिक्षा को नया व हैरानीजनक महसूस किया और भी आगे सभाओं की ईच्छा जाहिर की।

मुझे बार - बार सम्मान के योग्य बलदेव सिंह जी याद आ रहे थे जो इन राहों पर लगातार संग्राम करते रहे वह भी तब जबकि वहाँ आवाजाही के साधन व सड़कें भी ठीक नहीं थी, उनकी की गई तपस्या महसूस हो रही थी।

साथी सवेकों के साथ इस प्रकार के छोटे से प्रयास को करके मैं धन्य - धन्य महसूस कर रहा था।

(सेवक - श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी)

- -0- -

सत्य देव की जय,

कई दिनों से दिल में बार - बार विचार पैदा हो रहा था कि सम्मान के योग्य बड़े श्रीमान जी (श्रीमान बलदेव सिंह जी) के दर्शन करूँ... 26 मई को 4 साथियों समेत उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। काफी देर तक बड़े श्रीमान जी बहुत कमज़ोर सेहत के बावजूद हमारे साथ बैठे रहे व बातचीत करते रहे। आँटी जी व गोपाल जी से भी मिले। आँटी जी ने बड़ी आत्मीयता के साथ बातचीत की। ब्रेकफास्ट व लंच करवाया, हितकर विचार - विमर्श हुए।

मुझे श्रीमान जी को फल खिलाने का भी सौभाग्य मिला.... मुलाकात से नई ऊर्जा भी मिली। अपने आप पर बहुत लानत भी महसूस हुई कि जब श्रीमान जी हम पर अथाह प्रयास कर रहे थे तब हमने साथ नहीं दिया..... अब बगैर सिर पैर की भाग दौड़ कर रहे है..... कुछ समझ नहीं आ रहा है.....

(श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी)

शुभ संग्राम

श्रीमान जसविंद्र सिंह जी और श्रीमान गौतम जी 12 जुलाई 2024 को पंजाब के कई स्थानों पर गए और वहां धर्म संबंधियों से मिलने का संग्राम किया गया। उनसे कुछ हितकर बातचीत होती रही। कई धर्म संबंधियों को पढ़ने के लिए पुस्तकें दी गईं। फिर दोनों धर्म संबंधी 13 जुलाई 2024 को थराजवाला के लिए रवाना हो गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ मिलकर वहां धर्म संबंधियों से मिलने का संग्राम किया गया। फिर दोपहर तीन बजे के लगभग एक सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि नेचर के विकासक्रम में भगवान देवात्मा लासानी जहूर पैदा हुए हैं। उनमें सत्य और शुभ के लिए अनुराग विकसित हुआ है। उन्होंने बचपन में हित अनुराग से प्रेरित होकर गहने पहनने से इंकार कर दिया था। उन्होंने धर्म (सत्य और हित) की अद्वितीय शिक्षा दी है। उच्च जीवन का नाम ही धर्म है। सम्बन्धों में उच्च जीवन जीने की प्रेरणा की गई। सभा के बाद एक घर में पुस्तकें दी गईं। इसके बाद धर्म संबंधी मंदिर को देखने गए। मंदिर को साफ करने की योजना बनाई गई। फिर तीनों धर्म संबंधी फख़रसर के लिए रवाना हुए, वहां प्रभदीप सिंह को मिले। शाम तक धर्म संबंधी रामपुरा के लिए रवाना हो गए। वहां पर एक धर्म संबंधी से मुलाकात की गई। इस प्रकार यह छोटा सा शुभ संग्राम किया गया। धर्म सम्बन्धी प्रचारकों के उनके पास न पहुँचने से सब जगह के धर्म सम्बन्धियों ने बहुत दुःख महसूस किया कि किस प्रकार वह क्षेत्र किसी समय समाज के केन्द्र थे, जो कि अब वीरान पड़े हैं। धर्म संगत की कई धर्म सम्बन्धियों ने बहुत ज़रूरत महसूस की और ऐसे भाव व्यक्त किए।

'सेवक उत्सव' कल्याण

देव समाज के एतिहासिक गांव कल्याण में 20, 21, 22 जुलाई 2024 को सेवक उत्सव मनाया गया। इस उत्सव की तैयारियां श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्रीमान बूटा सिंह जी की सहायता से कर रखी थी। इसमें शामिल होने के लिए धर्म संबंधी श्री गंगानगर, गजसिंहपुर, मल्लेंका, केसुपुरा, गोनियाना, बठिंडा आदि से पधारे। कुछ लोकल जन भी शामिल हुए। सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान सरताज जी, श्रीमान गौतम जी ने करवाई। भजनों का गान श्रीमान गुरूदेव राज जी और श्रीमान गौतम जी करते रहे।

प्रवेश सभा, 20.7.2024, दिन शनिवार

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

देव स्त्रोत के गान के बाद श्रीमान गुरूदेव राज जी और श्रीमान गौतम जी ने मिलकर देवगुरू के सेवकों मेरे प्यारे साथियों भजन का गान किया।

श्रीमान सभापति जी ने सबसे पहले

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

बताया कि देव समाज का सेवक बनने के लिए 4 प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती है। 1. भगवान देवात्मा के संबंध में, 2. दुराचारों के संबंध में 3. सदाचारों के संबंध में 4. नियत दान आदि के संबंध में। चारों प्रतिज्ञाओं की व्याख्या की गई। सभापति जी ने श्रीमान भाटिया जी के जीवन में आए शुभ परिवर्तन का वर्णन किया। श्रद्धेया जी, श्रद्धेय पंडित परमेश्वर दत्त जी और श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवनों का गुणगान किया गया। माननीय श्रीमान गुरबख्श सिंह जी की घटना बताई गई। आने वाले धर्म संबंधियों का स्वागत किया गया।

21.07.2024, दिन रविवार, सुबह 8.00 बजे

सभापति : श्रीमान सरताज सिंह जी

विषय : देव समाज के सेवकों की देव समाज के प्रति सेवाएं।

भजन के गान के बाद सभापति जी ने भाई अमर सिंह जी के जीवन का और उनकी भगवान के मिशन के लिए की गई सेवाओं का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि भाई जी ने घोर विरोधता के बावजूद देव समाज के लिए वफादारी का दृष्टांत दिया। फिर उन्होंने श्रीमान राम सिंह जी के जीवन का दृष्टांत दिया। उनकी सेवाओं का नक्शा खींचा। उन्होंने धर्म प्यारी जी और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की गुरू भक्ति और सेवाओं का वर्णन किया।

21.072024, शाम 5.30 बजे

सभापति : श्रीमान गौतम जी

विषय : देव समाज का सेवक बनने के लाभ और कट जाने की हानियां।

भजन : सेवक हैं देवगुरू के सेवा किया करेंगे.....

सभापति जी ने फरमाया कि देव समाज से जुड़ने का पहला लाभ यह है कि इंसान मोटे मोटे आठ पापों से बच जाता है। नशों से इंसान किस प्रकार भिखारी बन जाता है उसका नक्शा खींचा गया। दूसरा लाभ मिथ्या विश्वासों से मोक्ष बताया गया। कैसे सेवक बनने से इंसान भरोसे के योग्य बन जाता है, उसके दृष्टांत दिए गए। सेवक बनने से किस प्रकार

शेष पृष्ठ 17 में

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts